बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के प्रथम दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक–15.10.2019, समय–पूर्वाह्न–11:00 बजे, स्थान–अधिवेशन भवन, पुराना सचिवालय, पटना)

1. बिहार सरकार के माननीय कृषि–सह–पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री डॉ॰ प्रेम कुमार जी
2. बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह जी
3. दीक्षांत–भाषण के लिए पधारे कृषि जगत् के विद्वान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक डॉ॰ मंगला राय जी
4. अपर मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा जी
5. पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की सचिव डॉ॰ एन॰ विजयालक्ष्मी जी
6. बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के समस्त वरीय पदाधिकारीगण, वैज्ञानिकगण, विद्यार्थीगण एवं कर्मचारीगण
7. उपाधि प्राप्त करने आए सभी विद्यार्थी और उनके परिजन
8. मीडिया के प्रतिनिधिगण
9. देवियो एवं सज्जनो!

बिहार की धरती प्राचीन समय से ही शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाती रही है। हजारों वर्ष पहले नालंदा विश्वविद्यालय में देश–विदेश के छात्र पढ़ने के लिए आते थे। राज्य में उच्च शिक्षा की गरिमा पुनः स्थापित करने के लिए बड़े कदम उठाए जा रहे हैं। इसी क्रम में नए विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना की जा रही है। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना भी इसी कड़ी का एक उदाहरण है। इस नवोदित विश्वविद्यालय के 'प्रथम दीक्षांत समारोह' के शुभ अवसर पर मैं कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह, विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों, शिक्षकों एवं डिग्री तथा पदक–प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। पशुपालन भारतीय कृषि का अभिन्न अंग रहा है। पशुधन हमेशा से भारत के आर्थिक–चिन्तन का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। कृषि और पशुपालन को प्रोत्साहित कर हम ग्रामीण क्षेत्र के करोड़ों किसानों और पशुपालकों को रोजगार और आर्थिक विकास से जोड़ सकते हैं। पशुपालन हो, मछली–पालन हो, मुर्गी–पालन हो या मधुमक्खी–पालन –इन पर किया गया निवेश ज्यादा मुनाफा देता है। पशु एवं मत्स्य विज्ञान में शिक्षा, शोध, प्रसार एवं प्रशिक्षण में गुणवत्तापूर्ण विकास हेतु बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना की स्थापना की गई है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की शोध परियोजनाएँ चल रही हैं। मुझे ऐसा विश्वास है कि इन शोध परियोजनाओं के सकारात्मक परिणामों से हमारे किसानों के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान में सहायता मिलेगी।

देश एवं राज्य में देशी नस्ल की गायों के सम्वर्द्धन हेतु भ्रूण–प्रत्यारोपण तकनीक की एक परियोजना इस विश्वविद्यालय में चलायी जा रही है। उम्मीद है, हमारे बिहार राज्य की देसी नस्ल की गाय 'बछौर' के संरक्षण में यह परियोजना सहयोग देगी। विश्व बैंक एवं आई॰सी॰ए॰आर॰ के सहयोग से 'राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना' इस विश्वविद्यालय में चल रही है, जिससे यहाँ के शिक्षा और अनुसंधान के स्तर में वृद्धि होगी।

इस विश्वविद्यालय के शैक्षणिक पशु चिकित्सालय में पालतू एवं वन्य पशु–पक्षियों के समुचित इलाज हेतु आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मुझे बताया गया है कि यहाँ के पशु चिकित्सालय में पशु–प्रजनन, शल्य–चिकित्सा व स्टेम सेल द्वारा चिकित्सा की व्यवस्था है। दुधारू पशुओं, मुर्गियों तथा शुकर की गुणवत्ता और स्वास्थ्य से लेकर डेयरी–उत्पादों के विभिन्न प्रकारों को विस्तार देने के लिए जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय विभिन्न प्रकार के पशु एवं पक्षी–पालन, मत्स्य–पालन एवं दुग्ध प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देकर बेरोजगार युवकों, गरीब किसानों एवं महिलाओं को रोजगार योग्य बनाता है। किसान–मेलों, गोष्ठियों, दूरदर्शन एवं रेडियो आदि के माध्यम से तकनीकी जानकारी दी जाती है। मुझे यह जान कर अति प्रसन्नता हुई है कि विश्वविद्यालय ने 'पशु आपदा प्रबंधन' पर भी बिहार राज्य के सभी पशु–चिकित्सकों को समुचित प्रशिक्षण दिया है। ये सारे प्रयास किसानों की आय दोगुनी करने में सहायक होंगे –ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं यथासमय राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से मिलता रहता हूँ तथा शिक्षा–सुधार पर जोर दे रहा हूँ। हमने सभी विश्वविद्यालयों में स्वच्छता–अभियान चलाने हेतु निर्देश दिया है। बड़ी संख्या में पौधारोपण कर 'हर परिसर, हरा परिसर' कार्यक्रम को सफल बनाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती–वर्षगाँठ के सुअवसर पर भी हमने संकल्प लिया है कि राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में 'जलशक्ति कैम्पस' और 'स्वच्छ कैम्पस' की अवधारणा को साकार किया जायेगा। विश्वविद्यालयों को गाँवों को गोद लेकर 'जलशक्ति ग्रामों' के सपने को भी साकार करना है। स्वच्छता, सफाई एवं जल–संरक्षण के कार्यों को मूर्त्त रूप देने के लिए सभी विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। 'जल–जीवन–हरियाली' योजना के तहत राज्य सरकार भी जल–संरक्षण एवं हरित–आवरण बढ़ाने की दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रही है। एकेडमिक और परीक्षा–कैलेण्डर के अनुसार समय पर नामांकन, वर्ग–संचालन और परीक्षा–संचालन करने के लिए सभी कुलपतियों को निर्देश दिये गये हैं। मुझे प्रसन्नता है कि आप ये सभी कार्य भली–भाँति कर रहे हैं।

प्रिय विद्यार्थियों! आप आज के 'दीक्षांत–समारोह' में दीक्षा–ग्रहण कर उपाधियाँ प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन शिक्षा की यात्रा कभी समाप्त नहीं होती। 'दीक्षांत–समारोह' को शिक्षा की समाप्ति नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि इसे तो अपने ज्ञान की अभिवृद्धि में प्रेरक मानना चाहिए।

आज का युग ज्ञान का युग है। अपनी जिज्ञासा को हमेशा जागृत रखना चाहिए। प्रिय विद्यार्थियों! औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप व्यवहारिक जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। मेरा मानना है कि आपने जो शिक्षा प्राप्त की है, आप उसका पूरा सदुपयोग करेंगे। आपने जो लक्ष्य चुना है, उसे पाने के लिए पूरी निष्ठा और एकाग्रता के साथ काम करेंगे। आप अपने उज्ज्वल भविष्य का सपना लेकर आगे बढ़ें और अपनी सफलता की कहानी स्वयं लिखें, मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

मैं आज के 'दीक्षांत–समारोह' में उपाधि और पदक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों तथा उनके शिक्षकों को पुनः बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***